फलादेश की सरल विधि

डॉ. सुशील अग्रवाल

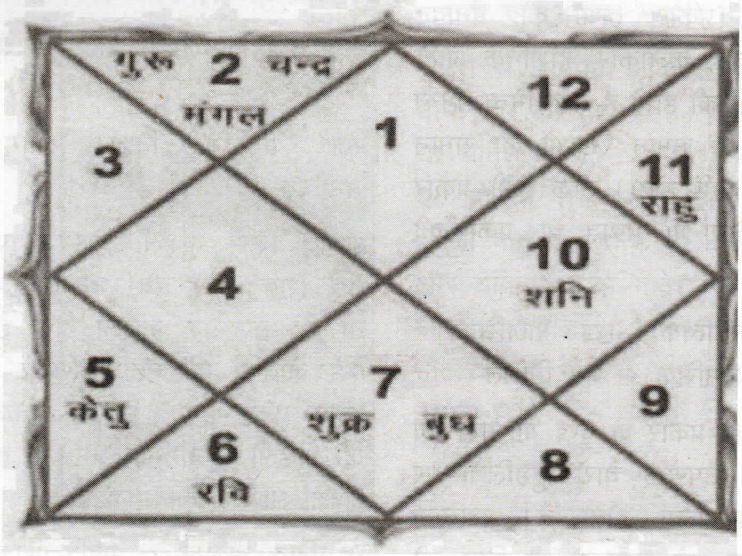

1. विषय प्रवेश

ज्योतिष शास्त्र के मुख्यतः तीन भाग हैं– गणित, संहिता और फलित। यह लेख 'फलित' भाग से सम्बन्धित है। ज्योतिषीय शास्त्र में फलित के यत्र–तत्र बिखरे हुए अनेक सूत्र हैं। अलग–अलग आधुनिक पुस्तकों में भी फलित की सम्पूर्ण विधि पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाता है बल्कि फलित से सम्बन्धित किसी विषय–वस्तु पर ही लिखा जाता है। वैसे तो सम्पूर्ण फलित की व्याख्या के लिए एक सम्पूर्ण पुस्तक ही लिखी जानी चाहिए, परन्तु इस लेख के माध्यम से प्रारम्भिक विधि को संक्षेप में प्रस्तुत करने से शुरू करते हैं।

2. फलित से पूर्व

किसी भी प्रकार के फलित करने से पूर्व ज्योतिषी को निम्न बिन्दुओं को सुनिश्चित कर लेना चाहिए।

• **सही जन्म का समय** : ज्योतिषी को पूर्ण प्रयास करना चाहिए कि जातक के सही जन्म समय का ही प्रयोग करें। इसमें कोई जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए क्योंकि कई बार जातक अंदाजे से समय बता देता है। जातक पर पूर्ण विश्वास करने की अपेक्षा कुंडली के आधार पर दिखने वाली कुछ घटित घटनाओं से या लग्न से संबंधित जातक के स्वभाव/प्रकृति आदि से ज्योतिषी को स्वयं सुनिश्चित करना चाहिए कि जन्मसमय सटीक है या नहीं।

• **सही जन्मकुंडली का निर्माण** : आजकल जन्मकुंडलियां सॉफ्टवेयर के आधार पर ही बनती हैं इसीलिए गणितीय गलती की सम्भावना कम होती है। एक विश्वसनीय सॉफ्टवेयर से ही कुंडली बनाएं।

• **देश–काल–पात्र की जानकारी**: सभी ज्योतिषीय शास्त्रों ने इस तथ्य की अनुशंसा की है कि ज्योतिषी को देश–काल–पात्र की जानकारी होना आवश्यक है। ऋषि मन्त्रेश्वर ने फलदीपिका में कहा है :

दशापहारेषु फलं यदुक्तं वर्णाधिकारानुगुणं वदन्तु ।

छिद्रेषु सक्ष्मेष्वपि तत्फलाप्तिः छायांङ्कवार्ताश्रवणानि वा स्युः।।

दशा–अन्तर्दशा के फल, जातक के वर्ण (पारिवारिक पृष्ठभूमि), अधिकार (सामजिक स्तर) और गुणों पर विचार करने के बाद कहना चाहिए। प्रत्यन्तर और सूक्ष्म दशा का विचार भी इसी सामंजस्य से करना चाहिए। जातक के व्यक्तित्व (छाया), बातचीत, श्रवण आदि से अनुमान लगाकर भी फल कहे जा सकते हैं।

ऋषि वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में देश–काल के महत्त्व पर बल देते हुए कहा है कि देश–काल का ज्ञाता ज्योतिषी वह कार्य कर सकता है जो एक हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते। महर्षि पराशर ने स्पष्ट बल अध्याय में कहा है कि जो व्यक्ति देश–दिशा–काल का ज्ञाता हो वही सत्य फलादेश कर सकता है।

3. फलित की प्रारम्भिक विधि

जन्म कुंडली के किसी भी भाव का

फलादेश करते समय निम्न नियमों का ध्यान रखना चाहिए :

• कुंडली का प्रकार

जिस प्रकार हाथ की बनावट वर्गाकार, कलाकार, दार्शनिक आदि प्रकारों की होती है तथा भिन्न–भिन्न हाथों में समान रेखाओं का समान फल नहीं होता। ठीक इसी प्रकार कुंडलियां भी मुख्यतः चार प्रकार की होती हैं :

क– सात्विक ख– राजसिक
ग– तामसिक घ– मिश्रित

एक ही प्रकार के दुख या सुख का असर उपरोक्त चारों कुंडलियों पर अलग–अलग होता है। सात्विक जातक बड़े दुःख में भी चित्त की स्थिरता बनाए रखता है, राजसिक जातक अधिक परेशान हो जाता है और तामसिक कुंडली वाला जातक अपना अत्यधिक परेशान होकर क्रोध आदि में गलत काम तक कर बैठते हैं। इसको ऐसे भी समझ सकते हैं कि एक ही प्रकार के बीज को यदि उपजाऊ, सामान्य और बंजर भूमि में डालेंगे, उनका एक जैसा फल नहीं हो सकता।

सात्विक कुंडली : महर्षि पराशर ने कहा है–

सत्व ग्रहोदयो जातो भवेत् सत्वाधिकः सुधी।

अर्थात जिस कुंडली में सात्विक ग्रह (सूर्य, चंद्रमा और गुरु) बलवान हों तो वह कुंडली सात्विक कुंडली होती है। ऐसे जातक को महर्षि पराशर ने उत्तम/विद्वान पुरुष कहा है। ऐसी कुंडली में लाभ भाव से ज्ञान लाभ ही होता है, विद्या का सामान्य योग भी उत्तम फल देने वाला होता है और खराब योग ज्ञान प्राप्ति में बाधा पहुँचाते हैं।

राजसिक कुंडली – महर्षि पराशर ने कहा है–

रजः ग्रहोदये विज्ञो रजोगुण समन्वितः।

अर्थात जिस कुंडली में रजोगुणी ग्रह (शुक्र और बुध) बलवान हों तो वह राजसिक कुंडली होती है। ऐसे जातकों को महर्षि पराशर ने मध्यम पुरुष कहा है। ऐसे व्यक्तियों की कुंडली में कर्मभाव धर्मभावों की अपेक्षा अधिक फलदायक होते हैं।

तामसिक कुंडली : महर्षि पराशर ने कहा है–

तमः ग्रहोदये मूर्खो भवेज्जातरतमोधिकः।।

अर्थात तमोगुणी ग्रह के बलवान (शनि, मंगल, राहु, केतु) होने से मनुष्य मूर्ख एवं तमोगुण की अधिकता वाला हो जाता है। महर्षि पराशर ने ऐसे जातकों को अधम पुरुष कहा है। तामसिक व्यक्ति की कुंडली में अच्छे से अच्छे ग्रह योग भी अपना पूरा फल नहीं दे पाते क्योंकि ऐसे लोगों की कर्महीनता उनकी कुंडली की शुभता को कमजोर कर देती है।

मिश्रित कुंडली : महर्षि पराशर ने कहा है–

गुणसाम्ययुतो जातो गुणासाम्य खगोदये।

अर्थात तीनों गुणों से युक्त ग्रह बलवान हों, ऐसे जातक को उदासीन पुरुष कहा गया है। ऐसे जातक कभी सत्य तो कभी असत्य बोलने वाले अर्थात द्विस्वभावी होते हैं। ऐसे जातकों की उन्नति या अवनति संग पर ज्यादा निर्भर रहती है।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से धर्म व कर्म दोनों को साथ रखने से ही जीवन में सुख मिलता है। सभी ज्योतिषीय शास्त्रों ने एकमत होकर धर्म और कर्म के अधिपतियों के संबंध को उत्कृष्ट राजयोग माना है। कुंडली के उपरोक्त प्रकारों को निश्चित करते समय ग्रहबल, लग्न एवं चन्द्र गृहित राशि का अच्छी तरह से अध्ययन करना चाहिए क्योंकि इन तीनों के मेल से ही मनुष्य की प्रकृति का पता चलता है।

• कुंडली के तीन भाव

प्रथम भाव : प्रथम भाव महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शरीर है और शरीर ही प्रवृत्ति या निवृत्ति मूलक सभी पुरुषार्थों का आधार है। यदि शरीर ही साथ नहीं देगा तो स्वार्थ और परमार्थ कैसे बनेंगे? अतः प्रथम भाव यदि बली तो आधार मजबूत होता है।

पंचम भाव : पंचम भाव बुद्धि तत्व को विशेष रूप से प्रभावित करता है अतः इस भाव का बली होने संतुलन और स्थिरता का सूचक है। यह भाव मनुष्य को आशान्वित कर उसकी कर्म शक्ति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य अपनी विवेक बुद्धि से तपोबल (कर्मशक्ति) के आधार पर अपने भाग्य को भी बदल सकता है। मार्कण्डेय ऋषि, नचिकेता, सावित्री, विश्वामित्र आदि अनेक महापुरुष इस

बात के प्रमाण हैं। महर्षि वशिष्ठ ने भी भगवान राम को ज्ञान देते हुए कहा था– हे राम! ऐसा कौन सा प्रारब्ध (भाग्य) है जो प्रबल पुरुषार्थ के सामने टिक सके?

नवम भाव : नवम भाव को भाग्य भाव कहते हैं। इस भाव के बिगड़ने से जातक भाग्यहीन हो जाता है। इस भाव के बली होने से जातक को गुरु और पिता आदि से भी सहयोग मिलता है।

• कुंडली के दो मुख्य ग्रह

लग्नेश : लग्नेश और लग्नेश का राशीश यदि बली हों तो ये एक प्रकार से बली सेनापति की तरह कार्य करते हैं। जिस प्रकार एक मजबूत सेनापति अपनी निर्बल सेना को भी प्रोत्साहित करके काफी आगे तक ले जाने में सक्षम होता है, उसी प्रकार लग्नेश और उसके राशिश के बली होने से कुंडली के योगों भली प्रकार से फलीभूत होते हैं।

चन्द्रमा : चन्द्रमा को निर्विवाद रूप से मन का कारक माना गया है। चन्द्र और चन्द्रेश यदि बली हों तो जातक व्यवस्थित रूप से अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने में सक्षम होता है। चन्द्रमा से जातक को मानसिक सहनशक्ति का भी भान होता है। जन्मकुंडली के सुख–दुख का सीधा असर मन की अनुभूति से होता है इसीलिए चन्द्रकुंडली के अध्ययन की सभी ज्योतिषीय शास्त्रों ने अनुशंसा की है।

• भावेश की स्थिति

भावफल का निर्धारण करते हुए भावेश की स्थिति को ध्यान में रखना भी परम आवश्यक है। भावेश यदि अपनी मित्र राशि, स्वराशि, मूलत्रिकोण राशि या उच्च राशि में हो या शुभ भाव में स्थित हो तो शुभ फल प्रदान करता है। भावेश जिस स्थान में होता है उस स्थान का आश्रय लेकर फल प्रदान करता है। जैसे धनेश यदि चतुर्थ भाव में हो तो माता से या भूमि संबंधी कार्यों से धन दिलाता है। भावेश का बल एक प्रकार से यह दर्शाता है कि वह अपने भाव से सम्बन्धित फल प्राप्ति में कितना समर्थ है।

• भाव कारक की स्थिति

भाव कारक यदि बलवान हो या शुभ युत–दृष्ट हो या शुभ भावों में स्थित हो तो भाव सम्बन्धित फल को पुष्ट करता है। जैसे यदि पंचमेश एवं पंचम भाव कारक गुरु दोनों बलवान हों तो पंचम भाव सम्बन्धित सभी फल विशेष रूप से मिलते हैं।

• भाव में स्थित ग्रह और उस पर दृष्टि

भाव में स्थित ग्रह या भाव को दृष्ट करने वाले ग्रह भी भावफल की वृद्धि–हानि के लिए उत्तरदायी होते हैं। भाव एक प्रकार से उस भाव के फलों का वातावरण है। जो–जो ग्रह उस भाव में स्थित होंगे या उस भाव को दृष्टि प्रदान करेंगे, वे अवश्य ही उस भाव के शुभाशुभ फल को प्रभावित करेंगे। यहाँ पर भावेश की स्थिति एवं दृष्टि से स्थित ग्रह के भाव के प्रभाव और नैसर्गिक शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि/स्थिति से दृष्टा ग्रह के नैसर्गिक कारकत्वों का भाव के फलों पर प्रभाव पड़ता है। भावेश की दृष्टि या स्थिति अपने भाव को सदैव पुष्ट ही करती है, वेशक वह ग्रह नैसर्गिक रूप से अशुभ ही हो।

• भाव एवं भावेश कर्तरी विचार

कर्तरी से अभिप्राय भाव या ग्रह के दोनों ओर बैठे ग्रहों से है। यदि भाव या भावेश के दोनों ओर शुभ ग्रह बैठे हों तो शुभ कर्तरी योग होता है जो भाव के शुभत्व को बढ़ाता है और यदि भाव या भावेश के दोनों ओर पाप ग्रह हों तो पाप कर्तरी योग होता है जो भाव के पाप फल को बढ़ाता है।

• योग विचार

फलादेश करते समय कुंडली के कुछ मुख्य 25–30 योगों का आकलन अवश्य करना चाहिए। जैसे– राजयोग, महापुरुष, महाभाग्य, गजकेसरी, शिक्षा सम्बन्धित योग, भावेशों से बनाने वाले योग, चन्द्राधि योग, नीचभंग राजयोग, विपरीत राजयोग आदि।

• सम्बन्धित वर्ग विचार

जन्मकुंडली और चन्द्रकुंडली जातक के जीवन की कुल संभावनाएं दर्शाती हैं, परन्तु एक ही भाव के अनेक कारकत्व होते हैं। इसीलिए कार्य विशेष से सम्बन्धित वर्ग से उस कार्य की सफलता–विफलता की पुष्टि होती है। वर्ग लग्नेश की स्थिति/बल से जातक की उस कार्य विशेष के लिए सामर्थ्यता और इच्छा का पता चलता है। मान लीजिए कि पंचम भाव पर शुभाशुभ दोनों प्रभाव हैं और D24 का लग्न और पंचम अशुभ हैं परन्तु D7 का लग्नेश और पंचम दोनों शुभ हैं। ऐसी स्थिति में

संतान प्राप्ति में बाधा नहीं होती और जातक को शिक्षा सम्बन्धित बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

• महादशा एवं गोचर विचार

कुंडली के अधिकतर योगों का फल दशा और गोचर के समन्वय से ही प्राप्त होते हैं। दशा के सन्दर्भ में महादशा फलों की दिशा निर्धारित करती है, जैसे फिल्म का निर्माता। अन्तर्दशा निर्माता की दिशा अनुसार अपने सामर्थ्य से कार्य करता है। इसीलिए महादशा और अन्तर्दशा के परस्पर सम्बन्धों का भी बहुत महत्त्व है। इससे सम्बन्धित लघु–पाराशरी के सिद्धांत बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। महादशा की अवधि लम्बी होती है इसीलिए गोचर जिन–जिन भावों को सक्रिय करता रहता है उस–उस भाव से संबंधित फल घटते रहते हैं।

इस प्रकार उपरोक्त सभी बिंदुओं पर विचार कर लेने के पश्चात् ही फलादेश करना चाहिए। उपरोक्त अवयवों के साथ–साथ निम्न बातों का ध्यान भी रखना चाहिए :

• जन्मकुंडली के बाद नवांश में ग्रहों और भावों के आकलन से फल विशेष की मात्रा में न्यूनाधिकता का आकलन करना चाहिए।

• केंद्र में या त्रिकोण में स्थिति शुभ होती है। त्रिक भावों में ग्रहों की स्थिति को अशुभ माना गया है।

• भाव–स्वामी और भाव–कारक का सम्बन्ध शुभ होता है।

• भावों में त्रिक भावेशों की स्थिति बाधाकारक है।

• भाव/भावेश के फलों की न्यूनाधिकता उस भाव और भावेश के बल पर निर्भर करता है।

• तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में नैसर्गिक पाप ग्रह आर्थिक दृष्टिकोण से शुभ फल देते हैं।

• सूर्य से सप्तम भाव में जो ग्रह हो वह अपना पूर्ण फल देता है। इस स्थिति में चन्द्र पक्ष बली और मंगल–गुरु–शनि वक्री होते हैं।

• गोचर विचार के समय अष्टकवर्ग अवश्य देखना चाहिए।

• उच्च ग्रह और मूल त्रिकोण ग्रह के फल अच्छे होते हैं। वर्गोत्तम ग्रह भी मूल त्रिकोण ग्रह के अनुसार फल देता है।

• भावेश के रूप में लग्नेश, पंचमेश और नवमेश सदैव शुभफलदायक होते हैं।

• राहु और केतु जिस–जिस भाव और जिन–जिन ग्रहों के साथ होते हैं, उन्हीं के गुण ग्रहण करते हैं।

• वक्री ग्रह तो सदैव बली माना जाता है।

• जब दशानाथ दो भावों का अधिपति होता है तो वह अपनी मूलत्रिकोण राशि वाले भाव का अधिक फल देता है। यदि वह अपने दोनों भावों में से शुभ भाव में बैठा है तो अशुभ भाव के अशुभ फल नहीं देता।

• सूर्य और चन्द्र यदि अष्टमेश हों, तो आयु की दृष्टि से अशुभ फल नहीं देते। यदि लग्नेश ही अष्टमेश हो तो भी अशुभ फलप्रद नहीं होता।

• राहु या केतु अकेले त्रिकोण में हों, तो भाव के लिए शुभ फलप्रद होते हैं। केन्द्र में होकर त्रिकोणेश से सम्बन्ध होने पर शुभ फलप्रद होते हैं।

• अस्त ग्रह प्रायः निष्फल होते हैं।

4. निष्कर्ष

इस लेख में स्थानाभाव के कारण कुछ अवयवों पर कम प्रकाश डाला गया है। जब आप विधिपूर्वक अध्ययन करने हैं तो कुंडली की परतें स्वत ही आपके सामने खुलने सी लगती हैं। हमने इस विधि को अनेक कुंडलियों पर परखा है और यह कह सकते हैं कि ज्योतिष के प्रारम्भिक छात्रों के लिए यह अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होगी। ❐